Page 1 , 26/10/2024

MA, Semester-1

Unit-I, Paper-II, advance Social Psy.

Topic— Social Psychology in Indian perspective.

समाज मनोविज्ञान मूलतः अंतरा-वैज्ञानिक प्रक्रियाओं (intra-individual differences) तथा सामाजिक संज्ञान (Social Cognition) के प्रति वचनबद्ध रहा है। भारत में समाज मनोविज्ञान अद्वैत वेदान्त (Advaita Vedanta) के सिद्धान्तों द्वारा अधिक प्रभावित हुआ है। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव तथा समाज में भेद नहीं किया जाता है। भारतीय सिद्धान्त में मानव अस्तित्व के अंतर्संबंधों (interrelations) पर अधिक बल डाला गया है तथा यह कहा गया है कि समाज ही आदर्श है न कि व्यक्तियों से अन्य व्यक्तियों से भिन्नता। अर्थात भारतीयों के लिए व्यक्ति और समाज में एक सहजीवी संबंध (Symbiotic relationship) होता है जहाँ व्यक्ति को समाज से एवं समाज को व्यक्ति से अलग नहीं किया जा सकता है।

भारत में मनोविज्ञान की पढ़ाई आरम्भ हुआ था सबसे पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय में 1916 में प्रारंभ की गयी। प्रोफेसर नरेन्द्र नाथ गुप्ता 1929 तक मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष बने रहे तथा वे प्रो० राधा कमल मुखर्जी के साथ मिलकर समाज मनोविज्ञान का पहला पाठ्य पुस्तक इन्ट्रोडक्शन टू सोसल साइकोलॉजी (introduction to Social Psychology) था, 1928 में प्रकाशित किया।

इस पुस्तक में प्रो० गुप्ता ने 'समूह मन' (Group mind) के संप्रत्यय को चुनौती दिया तथा मन को मस्तिष्क के तुल्य समझने की प्रक्रिया को एक भूल करार दिया।

भारत में समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र में ऑलपोर्ट द्वारा सामाजिक सरलीकरण (Social facilitation) पर किये गए प्रयोगों से मिलता-जुलता शोध कार्य किए स्वर्गीय प्रो० दुर्गानन्द सिन्हा (Late Prof. Durganand Sinha) एवं प्रो. जमुना प्रसाद (Prof Jamuna Prasad) ने 1935 में अफवाह के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। मर्फी (Murphy) 1953) ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों (intergroup relations) का अध्ययन प्रारम्भ किया और इस तरह के अध्ययन के प्रति कुछ भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने भी काफी ध्यान दिया। स्वर्गीय प्रो० डी० सिन्हा ने ग्रामीण लोगों पर इस क्षेत्र में शोध कार्य करके अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखा।

1970 तक समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र में किये गए कार्यों की समीक्षा से स्पष्ट हुआ कि भारतीय मनोविज्ञान की अभिरुचि कुछ सामाजिक समस्याएं, मनोवृत्ति, मत तथा समूह एवं अन्तर्वैयक्तिक प्रक्रियाओं (interpersonal process) के अध्ययन तक सीमित रहा। 1970 एवं 1980 के बीच किए गए कार्यों द्वारा इन परम्परागत क्षेत्रों से हटकर अन्य दूसरे क्षेत्र में उनके द्वारा कार्य किया गया। इन क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन (Social change) सामाजिक भूमिकाएं (Social roles) सामाजिक प्रत्यक्षण (Social perception) सामाजिक अभिप्रेरण (Social Motivations)

अन्तर्वैयक्तिक प्रक्रियायें (Interpersonal process)
तथा संगठनात्मक व्यवहार (organizational behavior)
आदि प्रमुख हैं इन दोनों में उपलब्धि आवश्यकता
(need for achievement), बहिर्मुखी (Extroversion)
अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण (Interpersonal attraction)
नियंत्रण बिन्दु (lines of control), दुश्चिन्ता (anxiety)
सत्तावाद (authoritarianism), हठधर्मिता (dogmatism)
आदि प्रमुख हैं एस. पी. आदिनारायण (1957, 1958, 1964)
ने रंग पूर्वाग्रह (colour prejudice), प्रजातीय
(social), साम्प्रदायिक (communal) तथा जाति
(caste), मनोवृत्ति (attitude) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण
कार्य किये। इसके बावजूद नन्दी (Nandy, 1974)
तथा मित्रा (Mitra, 1972) ने कहा है कि स्वतंत्र भारत
के आरंभिक के दिनों में अधिकतर भारतीय
समाज मनोवैज्ञानिक पश्चिमी देशों में किये गये
कार्य की पुनरावृत्ति करते पाये गए।
प्रो. जे पाण्डे (J. Pandey, 1981), प्रो. एस काणेकर
(S. Kanekar, 1981), प्रो एल कृष्णन (L. Krishnan
1981), प्रो. आर सिंह (R. Singh, 1981) के द्वारा
गुणारोपण (attribution), सूचना समन्वय (information
integration) के अध्ययन में काफी अभिरुचि
दिखलायी। इसके अतिरिक्त व्यवसायी कार्यों को
उन्नत बनाने के ख्याल से कई समाजिक मनोवैज्ञानिकों
ने इस क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया। 1980 के बाद
भारतीय समाज मनोवैज्ञानिकों के द्वारा समस्या
उन्मुखी शोध (Problem oriented research)
तथा बड़े-बड़े समाजिक समस्याओं के अध्ययन के

अधिक अभिरुचि दिखलायी गयी॥

स्व. उदय पारीख (Late Uday Pareekh, 1980) के अनुसार भारतीय समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय विकास तथा सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन के अभिरुचि दिखलायी गयी। आई.सी.एस.एस.आर (ICSSR) द्वारा किये गये सर्वे जिसका प्रकाशन प्रो. जे. पाण्डे (J. Pandey, 1988) द्वारा स्पष्ट किया गया भारतीय सामाजिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा पश्चिमी तथा विधि उपकरणों, मॉडल, एवं सिद्धान्तों की जगह पर भारतीय विधियों एवं सिद्धान्तों को अधिक बल दिया गया है 1983 दशक के बीच सामाजिक संज्ञान, सामाजिक मूल्य, गरीबी एवं वंचन, पूर्वाग्रह एवं व्यवहार, सामाजिक अभिप्रेरण, नेतृत्व के क्षेत्र में शोध कार्य किये गये। आई.सी.एस.एस.आर का पाँच वर्षों जिले (1993–2003) तक में किए गये शोधों को सङ्कलित किया गया तथा प्रो. गिरिश्वर मिश्रा के सम्पादकत्व में अध्ययन में प्रकाशित हुआ। में जिसमें स्वदेशी विधियों, उपकरणों एवं सिद्धान्तों के उपयोग पर अधिक बल दिया गया। इस सर्वे का दूसरा वॉल्यूम (volume) का शीर्षक है सामाजिक एवं संगठनात्मक प्रक्रियाएँ।

अतः प्रो. जे. बी. पी. सिंह, 1986, 1993), जे पाण्डे एवं कान्त नायडू, 1992) एवं अन्य के द्वारा किये गए शोधों से स्पष्ट होता है कि इन लोगों द्वारा पश्चिमी सिद्धान्तों एवं मॉडल को परिवर्तित करके भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के योग्य बनाने का सराहनीय कार्य किया गया।

Kumar Patil
Maharaja College, Arrah